अनुक्रमणिका Content

सर्टीफीकेट	IV
आभार	V
प्राक्कथन	VII
प्रथम अध्याय :	**1-68**

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बंगाल की राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तथा वर्तमान तक की सांगीतिक गतिविधियाँ ।

1. राजनैतिक परिस्थिति :

- ❖ बंगाल का राजनैतिक नव-जागरण
- ❖ सुधारकों का प्रादूर्भाव
- ❖ राजनैतिक परिस्थिति का सुधार

2. सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थिति :

- ❖ समाज-संस्कृति का सबन्ध
- ❖ पाश्चात्य संस्कृति का ज़ोर
- ❖ समाज-संस्कृति तथा संगीत में सुधार

3. बंगाल का संगीत और संगीतकार :

- ❖ रामनिधि गुप्त (निधुबाबू)
- ❖ राजा राममोहन राय
- ❖ क्षेत्रमोहन गोस्वामी
- ❖ रामशंकर भट्टाचार्य
- ❖ सौरीन्द्रमोहन ठाकुर
- ❖ कृष्णधन बैनर्जी
- ❖ द्विजेन्द्रलाल राय
- ❖ रजनीकान्त सेन
- ❖ अतुल प्रसाद सेन
- ❖ रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- ❖ काजी नज़रूल इस्लाम

द्वितीय अध्याय : **69-107**

भारतीय संगीतकारों का व्हायोलिन तथा अन्य विदेशी वाद्यों के प्रति दृष्टिकोण ।

- ❖ पं. वी. बलसारा
- ❖ श्रीमती दिपाली नाग
- ❖ पं. डी. के. दातार
- ❖ श्रीमती एन. राजम्
- ❖ पं. उल्हास कशालकर
- ❖ प्रो. वी. सी. रानाड़े
- ❖ पं. अरूण भादुड़ी
- ❖ उस्ताद मशकुर अली खाँ
- ❖ श्री बाबूलाल गन्धर्व
- ❖ श्री रमाकान्त सन्त
- ❖ श्री गौरीशंकर बैनर्जी

तृतीय अध्याय : **108-132**

भारतीय संगीत का विवर्तन एवं शास्त्रीय वाद्य-संगीत का व्हायोलिन वाद्य पर सर्वप्रथम क्रियात्मक प्रयोग तथा विकास ।

1. **भारतीय संगीत का विवर्तन :**

- ❖ भूमिका
- ❖ आदिम युग
- ❖ वैदिक युग
- ❖ गान्धर्व संगीत का युग
- ❖ रामायण तथा महाभारत काल
- ❖ बौद्ध तथा जैन काल
- ❖ भरत काल
- ❖ गुप्त काल
- ❖ मध्ययुग
- ❖ मुगल काल
- ❖ आधुनिक युग

2. **व्हायोलिन वाद्य पर शास्त्रीय संगीत का सर्वप्रथम क्रियात्मक प्रयोग तथा विकास ।**

चतुर्थ अध्याय : **133-146**

बंगाल में व्हायोलिन वादन के क्षेत्र में गायकी अंग एवं गत्कारी अंग का प्रभाव तथा पाँच तारवाले व्हायोलिन का निर्माण ।

- ❖ गायकी अंग तथा गत्कारी अंग का प्रभाव
- ❖ पाँच तारवाले व्हायोलिन का निर्माण

पंचम अध्याय : **147-175**

भारतीय वाद्य-संगीत में बंगाल के व्हायोलिन वादकों के रूप में प्रतिष्ठित वादक कलाकार तथा उनकी वादन शैली ।

- ❖ पं. गगन बाबू
- ❖ डॉ. जी. एन. गोस्वामी
- ❖ उस्ताद मतिउर रहमान
- ❖ प्रो. रॉबीन घोष
- ❖ श्री परितोष शील
- ❖ प्रो. शिशिरकणा धर चौधुरी
- ❖ पं. रघुनाथ दास
- ❖ श्रीमती सुलया बैनर्जी
- ❖ श्री विश्वजित राय चौधुरी
- ❖ श्री समीर शील

षष्ठ अध्याय : **176-256**

पश्चिम बंगाल तथा वर्तमान बांग्लादेश में भारतीय शास्त्रीय वाद्य-संगीत तथा व्हायोलिन के प्रयोग का अवलोकन ।

भूमिका

1. प्रहार वाद्यों की उत्पत्ति तथा बंगाल में उनका प्रयोग

- ❖ सितार और सुरबहार
- ❖ सरोद और सुरसिंगार

2. गज़ वाद्यों की उत्पत्ति तथा बंगाल में उनका प्रयोग

- ❖ इसराज
- ❖ मन्द्रबहार
- ❖ तार शहनाई
- ❖ दिलरूबा
- ❖ सारंगी
- ❖ व्हायोलिन

सप्तम अध्याय : **257-277**

व्हायोलिन वाद्य पर शास्त्रीय संगीत की अवधारणा से उत्पन्न वातावरण तथा सौन्दर्यशास्त्र के दृष्टि से विवेचन ।

- ❖ सौन्दर्यशास्त्र, कला एवं संगीत
- ❖ भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौन्दर्य
- ❖ व्हायोलिन वाद्य पर शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का सौन्दर्य

उपसंहार **278-281**

साक्षात्कार-सूची **282**

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची **283-289**